Arsh Ka Saya (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 233
Weekly Booklet : 233

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की एक क़िस्त बनाम

अ़र्श का साया

सफ़हात 21

- अच्छाई, बुराई का पेश्वा 04
- सात के लिये सात काफ़ी 09
- फ़िरिश्ते को रफ़ीक़े सफ़र बनाने का अ़मल बनाने का अ़मल 12
- अल्लाह पाक को "ऊपर वाला" कहना कैसा ? 15

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अ़र्श का साया**
सिने त़बाअ़त : जुमादल आख़िर **1443** हि., जनवरी **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

अ़र्श का साया

येह रिसाला (**अ़र्श का साया**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' सफ़्ह़ा 234 ता 245 से लिया गया है।

अ़र्श का साया

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्ह़ात का रिसाला ''**अ़र्श का साया**'' पढ़ या सुन ले, उसे क़ियामत की सख़्त गरमी में अ़र्श का साया नसीब फ़रमा कर अपने राज़ी होने की ख़ुश ख़बरी इनायत फ़रमा।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : पहला वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे, दूसरा मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला, और तीसरा मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वला। (بدور السافرۃ، 131، حدیث:366)

दीन का क़ुत़्बे आ'ज़म

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना **दीन का क़ुत़्बे आ'ज़म** है, (या'नी ऐसा अहम रुक्न है कि इस से दीन की तमाम चीज़ें वाबस्ता हैं) इसी अहम काम के लिये **अल्लाह** पाक ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा)। (احیاء العلوم، 2/377)

अ़र्श का साया मिलेगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मैदाने महशर के होलनाक माहोल में कि जिस दिन **अ़र्शे इलाही** के साए के इलावा कोई साया न होगा, उस दिन **अल्लाह** पाक अपने जिन मुत्तीअ़ व फ़रमां बरदार ख़ास बन्दों को अ़र्शे अ़ज़ीम के साए में जगह और जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला अ़ता फ़रमाएगा उन ख़ुश नसीबों में **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों का भी शुमूल होगा। चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई कि जिस ने **भलाई** का हुक्म दिया और **बुराई** से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) की त़रफ़ बुलाया, क़ियामत के दिन मेरे **अ़र्श के साए** में होगा। (حلیۃ الاولیاء، 6/36، رقم:7716)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

सूरज एक मील पर होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब क़ियामत का दिन होगा और सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, शिद्दते प्यास से ज़बानें बाहर निकल पड़ी होंगी, लोग पसीने में डुब्कियां खा रहे होंगे, **अ़र्श के साए** की सह़ीह़ मा'नों में उसी वक़्त **अहम्मिय्यत** पता चलेगी, इस की त़लब अपने दिल में पैदा कीजिये, गर्मियों की दोपहर हो और आप चिलचिलाती धूप में लक़ो दक़ सह़रा के अन्दर नंगे पांव चल रहे हों अगर ऐसे में कोई साएबान या साए की जगह नज़र आ जाए उस वक़्त आप को किस क़दर ख़ुशी होगी इस का आप बख़ूबी अन्दाज़ा कर सकते हैं ह़ालां कि क़ियामत की तमाज़त (या'नी गरमी) के मुक़ाबले में दुन्या की धूप कोई ह़ैसिय्यत नहीं रखती। लिहाज़ा बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक की रह़मत से "सायए अ़र्श" पाने के लिये आज दुन्या में ख़ूब ख़ूब **नेकी की**

दा'वत की धूमें भी मचाइये और **अल्लाह** पाक की जनाब में **सायए अ़र्श** की भीक भी मांगते रहिये ।

या इलाही गर्मिये महशर से जब भड़कें बदन दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुरशीदे हश्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 132)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुनाजात के तीनों अश्आ़र का नम्बर वार खुलासा मुलाहज़ा फ़रमाइये : (1) ऐ मेरे मा'बूद ! जब महशर बपा होगा और वहां की होशरुबा गरमी से लोगों के बदन तप और जल रहे होंगे उस वक़्त हम ग़ुलामाने मुस्तफ़ा को अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम की ठन्डी ठन्डी हवा नसीब करना (2) ऐ मेरे पाक परवर दगार ! क़ियामत की ख़ौफ़नाक तपिश और जान लेवा प्यास की शिद्दत से जब ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएं और बाहर निकल पड़ें ! ऐसे दिल हिला देने वाले माहोल में साहिबे जूदो सख़ावत, मालिके कौसरो जन्नत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ नसीब करना, काश ! काश ! काश ! हम प्यास के मारों को साहिबे कौसर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे हाथों से कौसर के छलक्ते जाम नसीब हो जाएं (3) ऐ रब्बे करीम ! क़ियामत के तपते हुए मैदान में कि जब सूरज ख़ूब बिफरा हुवा आग बरसा रहा हो, आह ! ऐसी जान घुलाने वाली सख़्त कड़ी धूप में जब कि भेजे खौल रहे हों, हमारे उस सय्यिदो सरदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन का धूप में साया ज़मीन पर न पड़ता था के अ़ज़ीमुश्शान झन्डे का हमें साया अ़ता करना ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अच्छाई, बुराई का पेशवा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी को अपना क़ाइद, पेशवा और लीडर बनाने से पहले आख़िरत के नफ़्अ़ व नुक़्सान के तअ़ल्लुक़ से ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये, जो ख़ुश नसीब किसी ख़ुदा रसीदा नेक बन्दे को अपना पेशवा बनाएगा उस की बातों पर अ़मल करेगा वोह बरोज़े क़ियामत उसी के साथ होगा और जो बद नसीब दुन्या की रंगीनियों में बद मस्त हो कर, दौलत व मन्सब की हवस के सबब बुरे पेशवा (लीडर) के फन्दे में फंस जाएगा और दुन्या में उस की बातों पर चलेगा तो महशर में उसी पेशवा (लीडर) के साथ होगा। हम सभी को क़ियामत की रुस्वाई से डरना चाहिये। **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 539 पर पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 71 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ

(پ15، بنی اسرائیل:71)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : (उस इमाम के साथ बुलाएंगे) जिस का वोह दुन्या में इत्तिबाअ़ (या'नी पैरवी) करता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह इमामे ज़मां (या'नी अपने दौर का पेशवा) मुराद है जिस की दा'वत पर दुन्या में लोग चले, ख़्वाह उस ने ह़क़ की दा'वत दी हो या बात़िल की। ह़ासिल येह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जम्अ़ होगी जिस के हुक्म

पर दुन्या में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि फ़ुलां के **मुत्तबिईन** (या'नी इत्तिबाअ़ व पैरवी करने वाले)

(तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 15, बनी इस्राईल, तहूतल आयह : 71)

नेकी के इमाम का ख़ुश अन्जाम

जिन ख़ुश नसीबों को तब्लीग़ व इर्शाद और नेकी की दा'वत के ह़वाले से दुन्या में मन्सबे वजाहत मिला होगा और उन्हों ने ब सद इख़्लास ख़ुश उस्लूबी के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभाई होगी उन के और नेकी और भलाई के कामों में उन का तआ़वुन करने वाले मुख़्लिसीन के आख़िरत में ख़ूब वारे न्यारे होंगे । इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़्रोज़ रिवायत सुनिये और झूमिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : नेकी के इमाम को क़ियामत में लाया जाएगा और उस से कहा जाएगा कि अपने परवर दगार के दरबार में ह़ाज़िरी दो तो वोह ह़ाज़िरी देगा कि दरमियान से ह़िजाबात (या'नी पर्दे) उठ जाएंगे, उस को जन्नत में जाने का हुक्म होगा, वोह जन्नत में जा कर अपनी मन्ज़िल (या'नी मक़ाम) और भलाई के कामों में तआ़वुन करने वाले दोस्तों की मनाज़िल (या'नी मक़ामात) देखेगा, उस से कहा जाएगा कि येह फ़ुलां की मन्ज़िल है और येह फ़ुलां की, तो वोह जन्नत में उन तमाम चीज़ों को देखेगा जो ख़ुद इस के लिये और इस के दोस्तों के वासिते तय्यार हैं और अपनी मन्ज़िल (या'नी मक़ाम) उन सब (दोस्तों की मन्ज़िलों) से अफ़्ज़ल पाएगा, फिर उसे जन्नत के हुल्लों (या'नी मल्बूसात) से एक हुल्ला (या'नी लिबास) पहनाया जाएगा और उस के सर पर जन्नत के ताजों में से एक ताज रखा जाएगा और उस का चेहरा चमकना शुरूअ़ होगा यहां तक कि चांद जैसा हो जाएगा, जो भी उसे देखेगा तो कहेगा : **या अल्लाह !** इसे

हम में से बना दे यहां तक कि वोह अपने उन दोस्तों के पास आएगा जो ख़ैरो भलाई में उस का साथ दिया करते और नेकी के कामों में हाथ बटाते थे। उन्हें कहेगा : ऐ फुलां ! ख़ुश हो जा जन्नत में **अल्लाह** पाक ने तेरे लिये ऐसे ऐसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं, उन्हें इस त़रह़ की ख़ुश ख़बरियां सुनाता रहेगा यहां तक कि उस के अपने रोशन चेहरे ही की त़रह़ उन दोस्तों के चेहरे भी ख़ुशी से **चमक उठेंगे** और इस त़रह़ से लोग उन्हें **चमक्ते चेहरों** से पहचानेंगे। (البدور السافرة، ص245)

पुर ज़िया कर मेरा चेहरा ह़श्र में ऐ किब्रिया शह ज़ियाउद्दीन पीरे बा सफ़ा के वासित़े

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

केसिट के "एक जुम्ले" ने दिल पर ऐसी चोट लगाई कि

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "दा'वते इस्लामी" के महके महके "दीनी माह़ोल" से हर दम वाबस्ता रहिये, इसी **दीनी माह़ोल** की बरकत से बे शुमार इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें गुनाहों से तौबा कर के **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने में मश्ग़ूल हो गए, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : नमाज़ों से जी चुराना, दाढ़ी मुंडाना, वालिदैन को सताना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह उन की ज़िन्दगी का ह़िस्सा बन चुके थे, गाने बाजे सुनने का तो उन को जुनून (या'नी पागल पन) की ह़द तक शौक़ था, त़रह़ त़रह़ के गाने उन के मोबाइल फ़ोन और कम्पयूटर में हर वक़्त मौजूद रहते। वोह इन्टरनेट के ग़लत़ इस्ति'माल के गुनाह में भी मुलव्वस थे। **जीन्ज़** (JEANS) के सिवा किसी और कपड़े की पतलून नहीं पहनते थे ह़त्ता कि एक मर्तबा **ईद** के मौक़अ़ पर वालिद

साहि़ब ने उन के लिये सूट सिलवा लिया लेकिन उन्हों ने उसे पहनने से इन्कार कर दिया और नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ पैन्ट शर्ट ख़रीद कर ईद के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर इसी लिबास में मल्बूस हुवे। **फ़ैशन** का दिलदादा होने की वज्ह से उन्हों ने इ़मामा और कुर्ते पाजामे के बारे में तो कभी सोचा भी न था। उन के **सुधरने** के अस्बाब कुछ यूं हुए कि उन की करीबी मस्जिद में जो नए **इमाम साहि़ब** तशरीफ़ लाए वोह ख़ुश क़िस्मती से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के दीनी माह़ोल से वाबस्ता थे। एक दिन उन्हों ने उन पर "इन्फ़िरादी कोशिश" करते हुए हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की रग़बत दिलाई, इमाम साहि़ब की "इन्फ़िरादी कोशिश" के सबब उन्हों ने दो एक बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर ही ली। एक दिन इमाम साहि़ब ने उन के वालिद साहि़ब को "दा'वते इस्लामी" के **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान की केसिट **"मुर्दे की बे बसी"** तोह़फ़तन दी। **अल्लाह** पाक की रह़मत से एक रात उस इस्लामी भाई को येह केसिट सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُلِلّٰه इस बयान की बरकत से उन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी, ख़ास कर इस "जुम्ले" : **"इन्सान को मरने के बा'द अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, गाड़ी हुई तो वोह भी गैरेज में खड़ी रह जाएगी।"** ने उन के दिल में इन्क़िलाब बरपा कर दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, अपना मोबाइल और कम्पयूटर भी गानों की नुहूसतों से पाक कर दिया और "दा'वते इस्लामी" के **दीनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए। इस "दीनी माह़ोल" ने उन्हें यक्सर बदल कर रख दिया, उन्हों ने अपने चेहरे पर प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी

मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** की निशानी **दाढ़ी मुबारक** और सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास ज़ेबे तन कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه येह बयान देते वक़्त वोह इस्लामी भाई यूनीवर्सिटी के होस्टल में **दा'वते इस्लामी** के शो'बए ता'लीम के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से दीनी कामों की धूमें मचाने की कोशिशों में मसरूफ़ हूं।

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल
गुनहगारो आओ सियहकारो आओ गुनह तुम से देगा छुड़ा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मस्जिद का इमाम गोया अ़लाक़े का बेताज बादशाह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मस्जिद के पेश इमाम इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने एक मॉडर्न और फ़ैशन परस्त नौ जवान को सुन्नतों का पैकर बना दिया ! मसाजिद के इमाम साह़िबान आ़म इस्लामी भाइयों की निस्बत उ़मूमन ज़ियादा बा असर होते हैं, ख़ुसूसन ख़ुश अख़्लाक़ और मिलनसार इमामे मस्जिद उस अ़लाक़े का गोया "**बेताज बादशाह**" होता है, लोग उस का बेह़द एह़तिराम करते और उस की बात दिलो जान से मानते और सर आंखों पर लेते हैं। अइम्मए किराम की ख़िदमत में मेरी इल्तिजा है कि वोह सिर्फ़ जुमुअ़तुल मुबारक के बयान ही पर इक्तिफ़ा न फ़रमाएं, मौक़अ़ की मुनासबत से रोज़ाना ही **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की तरकीब बनाएं, और दर्स देने वाले "मुअ़ल्लिम" की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के लिये उस में शिर्कत फ़रमाएं, ख़ूब "इन्फ़िरादी कोशिश" बढ़ाएं, **अ़लाक़ाई दौरा बराए** नेकी की दा'वत में

अपनी शिर्कत यक़ीनी बनाएं, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत भी पाएं, वाक़ेई अगर इमाम साहिब ख़ुद सफ़र करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه उन की देखा देखी उन के मुक़्तदी भी ब आसानी मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाएंगे। बहर ह़ाल हर इमामे मस्जिद को अपने इस मन्सबे वजाहत से "जाइज़ फ़ाएदा" उठाते हुए अपने अ़लाक़े में मदनी कामों की धूमें मचा कर सुन्नतों की बहारों का मदनी समां खड़ा कर देना चाहिये और अपने लिये सवाबे आख़िरत का ख़ूब ख़ूब ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर लेना चाहिये। अपने मुक़्तदियों से ज़ियादा बे तकल्लुफ़ बन कर अपना वक़ार ख़राब करने के बजाए फ़ालतू बातों से बच कर उन्हें सुन्नतों भरे महके महके मदनी फूल पेश करते रहने में दोनों जहानों की भलाई है। इस ज़िम्न में एक नसीह़त आमोज़ ह़िकायत समाअ़त कीजिये चुनान्चे

सात के लिये सात काफ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमते मुअ़ज़्ज़म में एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर नसीह़त का त़ालिब हुवा। आप رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ﴿1﴾ अगर तू रफ़ीक़ चाहता है तो **अल्लाह** पाक (की याद) तेरा रफ़ीक़ (या'नी साथी) काफ़ी है ﴿2﴾ हमराही चाहता है तो "किरामन कातिबीन" (या'नी आ'माल लिखने वाले बुज़ुर्ग फ़िरिश्ते) तेरे लिये काफ़ी हैं ﴿3﴾ अगर इ़ब्रत चाहता है तो "दुन्या का फ़ानी होना" इ़ब्रत के लिये काफ़ी है ﴿4﴾ अगर मूनिस व ग़म ख़्वार दरकार है तो "क़ुरआने करीम" काफ़ी है ﴿5﴾ अगर शग़ल (या'नी काम) चाहिये तो "इ़बादत" काफ़ी है ﴿6﴾ अगर वाइ़ज़ (या'नी नसीह़त करने वाला) चाहता है तो "मौत" काफ़ी है। येह छे मदनी फूल इ़नायत करने के बा'द सातवें नम्बर पर इर्शाद

फ़रमाया : ﴿7﴾ येह बातें अगर तुझे पसन्द नहीं हैं तो **दोज़ख़** तेरे वासिते काफ़ी है। (تذکرۃ الاولیاء، الجزء الاوّل ص224)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

छुप कर बे ह़याई करने वाले की ग़लत़ फ़हमी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم **नेकी की दा'वत** का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते थे, अगर उन से कोई नसीह़त का त़ालिब होता तो उस को आख़िरत में काम आने वाले ''मदनी फूल'' इनायत फ़रमाया करते थे। वाक़ेई अगर सफ़र व ह़ज़र हर जगह यादे इलाही का साथ हो, हर दम एह़सास हो, **''अल्लाह पाक देख रहा है।''** जैसा कि पारह 30 **सूरतुल अ़लक़** की 14वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है : ﴿اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰى﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या न जाना कि **अल्लाह** देख रहा है। तो फिर इन्सान गुनाहों के मुआ़मले में ख़ौफ़ज़दा और चौकन्ना रहता है और ज़ाहिरन और **ख़ुफ़्यतन** (या'नी पोशीदा त़ौर पर) **अल्लाह पाक और रसूल** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानियों से बचता है। जो लोग अपने नाक़िस ख़याल में छुप कर बुराइयां करते हैं उन को येह बात ख़ूब ज़ेह्न नशीन कर लेनी चाहिये कि जिन ख़त़ाओं को येह पोशीदा समझ बैठे हैं वोह सब की सब बुराइयां और बे ह़याइयां बदियां लिखने वाला फ़िरिश्ता जानता है और लिख भी रहा है ! अगर किसी बन्दे को इस बात का कमा ह़क़्क़ुहू एह़सास हो जाए तो उस को इस क़दर शरमिन्दगी और नदामत हो कि जी चाहे बस अभी ज़मीन फट जाए और मैं इस में समा जाऊं ! पारह 26 **सूरए** قٓ आयत नम्बर 18 में इर्शाद होता है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾ (پ26،ق:18)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुह़ाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

पारह 30 **सूरतुल इन्फ़िता़र** आयत नम्बर 10 ता 12 में है :

وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿۱۱﴾ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम पर कुछ निगह्बान हैं मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले, कि जानते हैं जो कुछ तुम करो।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पता लगा कि आ'माल नामा लिखने वाले फ़िरिश्ते हमारे छुपे और ज़ाहिर अ़मल को जानते हैं वरना तह़रीर कैसे करें। (इ़ल्मुल क़ुरआन, स. 85) سُبْحٰنَ اللّٰه ! जब आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते हमारे छुपे हुए आ'माल जानते हैं तो फिर तमाम फ़िरिश्तों बल्कि जमीअ़ मख़्लूक़ात के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपने ग़ुलामों के दिलों के ह़ालात क्यूं न आशकार (या'नी ज़ाहिर) होंगे ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : सरे अ़र्श : अ़र्श के ऊपर। **मलकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह। **इ़यां :** ज़ाहिर।

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है। दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो।

फ़िरिश्ते को रफ़ीक़े सफ़र बनाने का अ़मल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिसे दुन्या के बे वफ़ा होने का एह़सास हो, हर दम मौत का तसव्वुर बंधा हो, तिलावत व इ़बादत उस का मश्ग़ला हो ज़िक्रो दुरूद का सिल्सिला हो तो दोनों जहानों में उस का बेड़ा पार हो जाए। मुक़ीम हो या मुसाफ़िर हर एक को चाहिये कि वोह फ़ुज़ूल बक बक के बजाए ज़िक्रो दुरूद और सुन्नतों भरी प्यारी प्यारी बातों में अपना वक़्त गुज़ारे। ख़ुसूसन सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ एक मदनी फूल क़बूल फ़रमाइये। चुनान्चे मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िफ़ाज़त निशान है : जो शख़्स सफ़र के दौरान **अल्लाह** पाक की त़रफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे, उस के लिये एक **फ़िरिश्ता** मुह़ाफ़िज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त करने वाला) मुक़र्रर हो जाता है और जो बेहूदा शे'रो शाइ़री या फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ रहे तो उस के पीछे एक **शैत़ान** लग जाता है। (معجم کبیر، 17/324، حدیث:895)

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबोते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 157)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देना भी जिहाद है

ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे आदम व बनी आदम, **रसूले मुह़तशम, शाफ़ेए़ उमम** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : **जिहाद की चार क़िस्में हैं :** ﴿1﴾ नेकी का ह़ुक्म देना और ﴿2﴾ बुराई से मन्अ़ करना

और ﴾3﴿ **सब्र** के मक़ाम पर सच कहना और ﴾4﴿ फ़ासिक़ों से बुग़्ज़ रखना। जिस ने **नेकी का हुक्म** दिया उस ने मुअमिनीन के हाथ मज़्बूत़ किये और जिस ने बुराई से मन्अ़ किया उस ने फ़ासिक़ों की नाक ख़ाक आलूद की।

(حلیۃ الاولیاء، 5/11، رقم:6130)

फ़ासिक़ के "फ़िस्क़" से नफ़रत होनी चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : किसी फ़ासिक़ मुसल्मान से इस त़रह़ नफ़रत नहीं करनी चाहिये कि उस की ज़ात ही से नफ़रत हो जाए, हां ! उस के ग़लत़ अ़मल और ना जाइज़ काम को बुरा जानना चाहिये। क्यूं कि उस के येह गुनाह जो बाइ़से नफ़रत हैं आ़रिज़ी हैं लेकिन उस के दिल में मौजूद **ईमान** मुस्तक़िल है। येह ख़ुद एक मोमिन है और येह ऐसे उमूर हैं जो **मह़ब्बत** को लाज़िम करने वाले हैं लिहाज़ा इन पाकीज़ा ख़स्लतों की वज्ह से उस की ज़ात से **मह़ब्बत** होनी चाहिये और उस के बुरे कामों और गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये।

(ابریز، ص478 ملخصا)

फ़ासिक़ की सोह़बत सख़्त नुक़्सान देह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेह्न में रहे कि फ़ासिक़ के फ़िस्क़ से नफ़रत रखनी है इस के मा'ना हरगिज़ येह नहीं कि फ़ासिक़ की सोह़बत भी इख़्तियार करें। **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** (505 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 172 पर है : बुरी सोह़बतों से बचना बेह़द ज़रूरी है वरना आख़िरत तबाह हो सकती है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में "सिर्फ़ ज़बान" से लफ़्ज़

निकाले जाएं और मा'ना मुराद न हों।" (फ़तावा रज़विय्या, 29/567) तो (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस फ़रमान की रोशनी में) आप की याद दिहानी के लिये अ़र्ज़ है कि **नमाज़े वित्र** में आप **दुआ़ए क़ुनूत** तो पढ़ते ही होंगे जिस में (येह भी) है : وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ या'नी "(**या अल्लाह**! हम) अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे।" अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो चलिये अब पता चल गया लिहाज़ा अपने रब्बे करीम से किये जाने वाले रोज़ रोज़ के इस वा'दे को अब अ़मली जामा पहना ही दीजिये और नमाज़ न पढ़ने वालों, गालियों, बद गुमानियों, तोहमतों, **ग़ीबतों** चुग़लियों और त़रह़ त़रह़ से ना फ़रमानियों में मुलव्वस रहने वालों फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों की बैठकों और उन की सोह़बतों से तौबा कर लीजिये। और क़ुरआने करीम भी ऐसों की सोह़बत से मन्अ़ फ़रमाता है, जैसा कि पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 68 में इर्शाद होता है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

तफ़्सीराते अह़मदिय्या में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और फ़ासिक़ीन हैं। (تفسیرات احمدیه ص۳۸۸) "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 173 पर है :

नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिक़ों के पास जाना जाइज़ है

जो इस्लामी भाई **मुत्तक़ी** परहेज़ गार हो, वोह भी यारी दोस्ती में नहीं बल्कि सिर्फ़ नेकी की दा'वत की ह़द तक ना फ़रमानों और बिगड़े

हुए लोगों के साथ बैठ सकता है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, ''**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**'' सफ़ह़ा 260 पर पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 69 में रब्बुल इ़बाद इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़ गारों पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं, हां नसीह़त देना शायद वोह बाज़ आएं।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : ''इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीह़त और इज़्हारे ह़क़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है।''

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब ''नेकी की दा'वत'' का मज़्मून यहां ख़त्म हुवा। दरजे ज़ैल सुवालात अमीरे अहले सुन्नत के मल्फ़ूज़ात से लिये गए हैं जिन्हें मौज़ूअ़ की मुनासबत से यहां शामिल किया जा रहा है।

अल्लाह पाक को ऊपर वाला कहना कैसा ?

सुवाल : ''क्या येह कह सकते हैं कि ''**अल्लाह** पाक ऊपर है''?

जवाब : अल्लाह पाक जगह से पाक है लिहाज़ा येह नहीं कह सकते कि **अल्लाह** पाक ऊपर है या नीचे है या दाएं या बाएं है। (बहारे शरीअ़त, 1/19, ह़िस्सा : 1 माख़ूज़न) बा'ज़ लोग बोलते हैं कि **अल्लाह** पाक आसमान पर रहता है और कोई बोलता है कि अ़र्श पर रहता है ह़ालां कि **अल्लाह** पाक

के लिये कोई मकान या'नी ठहरने, क़ियाम करने और रुकने की जगह हो ऐसा कोई मुआ़मला नही है। **अल्लाह** पाक का कोई बदन नहीं और वोह जिस्म व जिस्मानिय्यत से पाक है। (درمختار، 2/358 ماخوذاً) येह कहना कि **अल्लाह** पाक ऊपर है इसे उ़लमा ने कुफ़्र लिखा है। (بحرالرائق، 5/203) **अल्लाह** पाक की ज़ात के तअ़ल्लुक़ से इस त़रह़ के मसाइल समझने के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه आप का ईमान ताज़ा हो जाएगा और आप को सैंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों ऐसे कुफ़्रिय्यात का पता चल जाएगा जो आज कल लोगों में राइज हैं।

(मलफ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 31, स. 7)

गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले

सुवाल : आप ने फ़रमाया है कि "**अल्लाह** पाक को ऊपर वाला या **अल्लाह** पाक अ़र्श पर है" येह नहीं कहना चाहिये जब कि हम ने सुना है मे'राज की रात सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्श पर **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले गए और अ़र्श ऊपर ही है तो इस का क्या मत़लब है ? (सोशल मीडिया के ज़रीए सुवाल)

जवाब : प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात के लिये अ़र्श पर गए येह अ़वाम की बात है। येह दुरुस्त है कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्श पर गए मगर **अल्लाह** पाक का दीदार कहां हुवा इस का तज़्किरा नहीं है। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले, गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं यां ख़ुद जिहत को लाले, किसे बताए किधर गए थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 235)

ख़िरद का मा'ना है अ़क़्ल और समझ, गुमान या'नी ख़याल, जिहत का मा'ना है सम्त या डाएरेक्शन। शे'र का मत़लब येह हुवा कि अ़क़्ल से कह दो कि अब हथियार डाल दे सोचे नहीं क्यूं कि गुज़रने वाले ख़याल से भी वराउल वरा हो गए हैं, बल्कि यहां ख़ुद जिहत और सम्त को भी लाले पड़े हैं न ऊपर न नीचे न दाएं न बाएं। इस त़रह़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सर की आंखों से **अल्लाह** पाक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए हैं। किस त़रह़ देखा ? या कैसे देखा ? येह बातें सोचने की नहीं बल्कि मान लेने की हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 31, स. 8)

सुवाल : इन अश्आ़र की वज़ाह़त फ़रमा दीजिये।

(निगराने शूरा ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त़्त़ारी का सुवाल)

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया
अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिन सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिब व त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 53, 54)

जवाब : इन अश्आ़र की वज़ाह़त येह है कि "**या अल्लाह**! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा ! हम पर ऐसा करम हो जाए कि जब हम दुनिया से जाएं तो तेरे गवाह येह न कहें कि ना फ़रमान दुनिया से गया, बल्कि फ़िरिश्ते ख़ुशी मनाएं कि एक नेक बन्दा हमारे पास आया और दुनिया वाले अफ़्सोस करें कि एक नेक बन्दा हम से बिछड़ गया।" यहां शाहिद से या तो सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकत मुराद है, क्यूं कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम शाहिद भी है। जैसा कि क़ुरआने करीम की एक आयते मुबारका में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तीन अल्क़ाबात

''शाहिद, मुबश्शिर, और नज़ीर'' ज़िक्र किये गए हैं।[1] या शाहिद से मुराद मोमिनीन हैं। या'नी जब मैं मरूं तो मुसल्मान येह न कहें कि वोह फ़ाजिर गया। मेरा ज़ियादा रुज्हान भी इसी त़रफ़ है कि यहां मुसल्मान मुराद हैं, क्यूं कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो रह़मत फ़रमाने वाले और अपने गुलामों के उ़यूब छुपाने वाले हैं। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तो **अल्लाह** की अ़त़ा से इस बात का भी इ़ल्म है कि कौन फ़ाजिर है! और कौन मुत्तक़ी है! (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 246, स. 8)

अ़र्श का साया दिलाने वाला अ़मल

सुवाल : कोई ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब अ़र्श का साया मिले ?

जवाब : अह़ादीसे मुबारका में क़र्ज़ दार को मोहलत देने या क़र्ज़ा मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो तंगदस्त को मोहलत दे या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे, **अल्लाह** पाक उसे उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।'' (ترمذی، 3/52، حدیث:1310) एक और रिवायत है : ''जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया **अल्लाह** पाक उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा।''

(مسند امام احمد، 8/367، حدیث:22622) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 248, स. 2)

''अ़र्शे आ'ज़म पे रब'' वाला शे'र पढ़ना कैसा ?

सुवाल : येह शे'र दुरुस्त है या नहीं ?

---

1 ... (پ22، الاحزاب:45) ﴿يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता।

अ़र्शे आ'ज़म पे रब सब्ज़ गुम्बद में तुम क्यूं कहूं मेरा कोई सहारा नहीं
मैं मदीने से लेकिन बहुत दूर हूं येह ख़लिश मेरे दिल को गवारा नहीं

जवाब : इस शे'र के इब्तिदाई अल्फ़ाज़ ''अ़र्शे आ'ज़म पे रब'' में ब ज़ाहिर مَعَاذَاللّٰه अ़र्शे आ'ज़म पर **अल्लाह** पाक का मकान माना गया है और **अल्लाह** पाक के लिये मकान मानना कुफ़्रे लुज़ूमी है। अगर इस शे'र की इब्तिदा में ''अ़र्शे आ'ज़म का रब'' पढ़ें तो शे'र शर्ई गिरिफ़्त से निकल जाएगा। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 242)

फ़ेहरिस

दीन का कुत्बे आ'ज़म.....1
अ़र्श का साया मिलेगा.....2
सूरज एक मील पर होगा.....2
अच्छाई, बुराई का पेशवा.....4
नेकी के इमाम का ख़ुश अन्जाम.....5
''एक जुम्ले'' ने दिल पर
ऐसी चोट लगाई कि.....6
मस्जिद का इमाम गोया
अ़लाक़े का बेताज बादशाह.....8
सात के लिये सात काफ़ी.....9
छुप कर बे हयाई करने वाले की
ग़लत फ़हमी.....10
फ़िरिश्ते को रफ़ीक़े सफ़र
बनाने का अ़मल.....12
नेकी की दा'वत देना भी
जिहाद है.....12
फ़ासिक़ के ''फ़िस्क़'' से
नफ़रत होनी चाहिये.....13
फ़ासिक़ की सोहबत
सख़्त नुक़्सान देह है.....13
नेकी की दा'वत देने के लिये
फ़ासिक़ों के पास जाना.....14
अल्लाह पाक को ऊपर वाला
कहना कैसा ?.....15
गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले.....16
अ़र्श का साया दिलाने वाला अ़मल....18
''अ़र्शे आ'ज़म पे रब'' वाला
शे'र पढ़ना कैसा?.....18

तंगदस्त मक़्रूज़ को मोहलत देने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ وسلم : जिस ने किसी तंगदस्त मक़्रूज़ को मोहलत दी या उस का (कुछ हिस्सा) क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया, **अल्लाह** पाक उस को अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा उस दिन जब अ़र्श के साए के इलावा कोई साया न होगा।

(ترمذی، 3/52، حدیث:1310)